अब ऐसी नवरात्रि मनाओ

ब्रह्माकुमार:- भगवान भाई
शांतिवन आबू पर्वत

भारत एक पवित्र भूमि है। मनुष्य और देवताओ की कर्मभूमि व चरित्रभूमि हैं और स्वयं परमात्मा की भी अवतरण भूमि हैं। इसलिए भारत वर्ष में अनेक त्यौहार मनाये जाते है। जिससे मनुष्य को जीवन में एक नया उमंग उत्साह तथा नयी प्रेरणा मिलती है।हर त्यौहार में कोई न कोई आध्यात्मिक रहस्य समाया हुआ हैं। इसलिए भारत भूमि का गायन भी महान हैं। भारत भूमि को विश्व में एक महान तीर्थ -स्थान भी माना जाता हैं।

सभी त्यौहारों को आपस में गहरा सम्बन्ध हैं। कलियुग के घोर अंधकार में स्वयं परमपिता परमात्मा इस धरा पर सभी को पावन बनाने के लिए आते हैं। अपना यह दिव्य कार्य करने केलिए ज्ञान का कलश माताओं कन्याओं को स्वर्ग का द्वार कहा जाता हैं। विद्या क देवी सरस्वती धन की देवी लक्ष्मी, शक्ति की देवी दुर्गा का गायन हैं। क्योंकि परमात्मा स्वयं माताओं कन्याओं को सम्मान देते हैं। नवरात्रि में भी देवियों का आहान करते हैं। जब सभी मातायें बहनें जागृत होकर विश्व में ज्ञान देती है तब रावण अर्थात मनोविकार खत्म हो जाते हैं। उसको ही दशहरा कहा जाता हैं। दशहरे के बाद अर्थात जब विकारों परसभी जीत पाते है तब खुशियों के दिन स्वर्ग के रुप में आते हैं जिसका यादगार पर्व दिवाली रुप में मनायी जाती हैं। इस तरह हर एक त्यौहार का आपस में एक दूसरे से सम्बन्ध है। प्रस्तुत लेख में नवरात्रि का आध्यात्मिक रहस्य तथा नवरात्रि कैसे मनाई जाये इसको स्पष्ट किया हैं।

नव माना ही परिवर्तन करने वाला प्रगति करने वाला व नया करने वाला। रात्रि माना ही दु:ख, अशांति अंधकार भष्ट्राचार आदि। वास्तव में नवरात्रि मनाना अर्थात इस अंधकार, दु:खमय दुनिया में अपने जीवन में कुछ नवीनता प्रगति तथा परिवर्तन करना। इसलिए नवरात्रि के दिनो में जागरण करते हैं। देवीयों का आह्वान करते हैं। जिससे परमात्मा प्रसन्न हो जायें जीवन का अंधकार मिट जाय। लेकिन सोचने की बात है हमने आज तक कितनी नवरात्रियॉ मनाई होगी तब भी उन्नति के बजार जीवन में तथा विश्व में अंधकार तो और बढ़ता ही जा रहा है। दुर्गा की पूजा करते हुए और ही दुर्गणों में फॅसते जा रहे हैं। संतोषी देवी की पूजा करते हुए भी जीवन में असंतोष नजर आ रहा हैं। इन सबका कारण केवल एक ही हैं कि इन त्यौहारों के पीछे जो राज छिपा है उसको हम नही जानते हैं। त्यौहारों के रहस्य को जीवन में धारण नहीं किया हैं। इसलिए कहते भी हैं। मुख में राम-राम बगल में छुरी।

देवियो की पुजा, देवियों का आह्वन तो आदर पूर्वक, नियमप्रमाण करते हैं। लेकिन व्यावहारिक रिति सेजो भी मातायें-बहनें रुप में नहीं देखते बक्लि माताओं, बहिनों को केवल विषय भोग के दृष्टि से ही देखते हैं। माताओं बहिनों की लाज लुटते हैं। उनको देखते ही दृष्टि वृति चंचल करते हैं। ऐसा अगर हम करते रहेंगे और उन्हें सम्मान नहीं देगे, तो चाहे अनगिनत बार भी नव रात्रि मनायें देवियों का आह्वन करे कोई भी देवी नहीं आयेगी। जीवन में और विश्व में अंधकार दु:ख और अशांति बढ़ती ही जायेगी। इसलिए सर्व प्रथम हमें माताओ बहनों को पवित्र दृष्टि से देखना जरुरी हैं। तब ही हमारे अंदर जो दुर्गण हैं असंतोष हैं, अंधकार हैं वह मिट जायेगा। यही हैं सच्ची नवरात्रि मनाना।

स्वयं परमपिता परमात्मा विश्व को पावन बनाने के कार्य अर्थ माताओं-बहनों का सहयोग लेते हैं। ज्ञान का कलश माताओं को देते हैं। इसलिए वंदे मातरम् गाई जाती हैं। माताओं कन्याओं द्वारा सभी विकारों का संहार होता हैं। नारी द्वारा परमात्मा विश्व को विद्या देते हैं इसलिए विद्या की देवी जगदम्बा सरस्वती मानी जाती हैं। ज्ञान द्वारा मनोविकारों का संहार किया जाता हैं, दुर्गूणो को निकाला जाता है इसलिए दुर्गामाता का गायन हैं। अब वही समय है जबकि हर मानव विकारों के, दुर्गुणो के दल-दल में फॅसा हैं। नवरात्रि का त्यौहार ऐसे नारीयों का फिर से आह्वन कर दुर्गणों को तथा विकारों को निकालने का यादगार पर्व हैं।

नवरात्रि मनाना माना ही काम क्रोध, लोभ, मोह, अंहकार इन विकारो पर जीत पाना। इसलिए दुर्गा का वहान सिंह दिखाते हैं। ५ विकार तथा कर्मेन्द्रिय जीत का यह प्रतिक हैं। जब परमात्मा को निस्तर याद करेंगे तब ही विकारो पर जीत पा सकेंगे। इसलिए दुर्गा को शिवशक्ति कहा जाता हैं हाथ में माला भी दिखाते भी दिखाते हैं। माला परमात्मा के याद का प्रतीक है। जब परमात्मा को याद करेंगे तो जीवन में सामना करने की समाने की निर्णय करने की, परखने की, सहन करने की, सहयोग की विस्तार को सारमें लाने की यह अष्टशक्तियॉ जीवन में आति हैं। इसलिए दुर्गा को अष्ट भुजा दिखाते हैं। हाथ में बाण दिखाते हैं जो कि ज्ञान रुपि बाण मुख द्वारा चलाकर विकारो का संहार किया उसका यह प्रतिक है। इस तरह अब केवल दुर्गा का आह्वन नहीं करना हैं दुर्गा समान बनकर अपने अंदन के तथा दूसरो के भी दुर्गुणों का संहार करना माना ही दुर्गा देवी का आह्वान करना हैं।

१. सरस्वती:- परमात्मा ने जो ज्ञान दिया है उसका सिमनण कर, और उसे धारण कर स्वयं को तथा दूसरों को भी भरपूर करना ही सरस्वती का आह्वान करना हैं।

२. शीतला:- अपने शांत स्वभाव से दूसरों को भी शांति का शीतलता का अनुभव कराना ही शीमला देवी का आह्वान करना हैं।

३. गायत्री:- सभी को परमात्मा की सुनाई हुई सच्ची गीता सुनाना तया उसे स्वयं में धारण कर ना ही गायत्री का आह्वान करना हैं।

४. काली:- अपने अंदर जो भी विकारों स्वभाव संस्कार है उस दृढ़ प्रतिज्ञा करके एक धक से उससे मुक्ति पाना और मैं-पन का त्याग करना ही काली का आह्वान करना है।

५. संतोषी:- कोई भी परिस्थितियों में सदा संतुष्ट रहना तथा सभी को संतुष्ट करना ही संतोषी देवी का आह्वान करना हैं।

६. वैष्णो:- मायावी विषय विकारों से सदा दूर रहाना तथा दूसरों को भी विषय विकारों से मुक्त करना ही वैष्णो देवी का आह्वान करना हैं।

७. उमा :- दु:खमय परिस्थिति में भी सदा उमंग उत्साह में रहना सर्व को उमंग उत्साह देना ही उमा देवी का आह्वाना करना है।

८. मीनाक्षी:- सभी को परमात्मा का दिया हुआ ज्ञान देकर सभी का तीसरा नेत्र खोलना अर्थात जीवन में आध्यात्मिक क्रांति लाना ही मीनाक्षी देवी का आह्वाना करना हैं।

९. महालक्ष्मी:- जीवन में महान लक्षण धारण करना ही महालक्ष्मी का आह्वाना करना है। इसके साथ ही विश्व परिवर्तन की सेवा स्वपरिवर्तन के साथ करना, पवित्रता धारण करना ही मुकुट तथा छत्र का प्रतिक हैं। अपना जीवन कमल पुष्प समान न्यारा प्यारा बनाना स्व का दर्शन करना अर्थात स्वयं के अंदर की कमजोरी को देख उसे निकालाना और मुख द्वारा ज्ञान सुनाना। यह सब कमल, स्वदर्शन चक्र शंख का हाथ में दिखाते हैं।

इस तरहसे नौ देवियों के आध्यात्मिक रहस्यों को धारणा करना ही नवरात्रि मनाना हैं। इस कलियुग के घोर अंधकार में वर्तमान समय स्वयं परमात्मा माताओं कन्याओं द्वारा सभी को ज्ञान देकर फिर से स्वर्ग की स्थापना कर रहे है। इसलिए अब हमें परमात्मा द्वारा दिये गये इस ज्ञान को धारणा करके अपने अंदर जो भी विकार हैं व अव गुण हैं उसे खत्म करना है। जिस रुप में चाहिए उस रुप का आह्वाना करके अब जल्दी ही विकारों का संहार करना हैं। क्योंकि अब समय बहुत कम हैं।

ओम् शांति

———————————————————————————————